मन्नू भंडारी की कहानी : एक दृश्य

जूली कुमारी

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग

बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय

मुजफ्फरपुर

मन्नू भंडारी नयी कहानी लेखन की चिंतन धारा को नयी अर्थव्यक्तता देने वाली प्रमुख कथा लेकिका हैं। अनाड़ी के बाद कहानी लेखन के क्षेत्र में कई प्रयोग किए गए। कथा चिंतकों, समीक्षकों एवं कथाकारों नें लगभग हर दस वर्षों पर कहानी की संरचना और कलेवर को बदलने का प्रयास किया जिसके कारण कई कहानी आंदोलन देखने को मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर नई कहानी, आंदोलन, सचेतन कहानी, अकहानी, कहानी और समानान्तर कहानी आदि कथा लेखन के विभिन्न चिंतन सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों रूप में देखने को मिलते हैं।

मन्नू भंडारी नयी कहानी आंदोलन से लेकर आज तक की तमाम कहानी आंदोलनों की साक्षी रही है। उन्होंने इस दौर में कथा–लेखिका और कथा–चिंतन दोनों तरह की भूमिका का निर्वाहन किया। मन्नू भंडारी ने कहानी लेखन के आरंभ और राजेन्द्र यादव से मुलाकात के संबंध में लिखा है :–

"सात–आठ कहानियाँ लिख लेने के बाद मेरा परिचय राजेन्द्र यादव से हुआ और दो–चार मुलाकातों के बाद ही यह परिचय मित्रता में बदल गया जिसका मुख्य आधार था लेखन। राजेन्द्र हमारी कहानियों को सुनते और उनपर सलाह–सुझाव देते पर मेरे गले उनकी कुछ बातें ही उतर पातीं, अधिकतर को पचा पाना तो मेरे बूते के बाहर थीं। मेरी कहानियाँ होती थी– सीधी, सहज और पारदर्शी और राजेन्द्र के सुझाव होते थे बड़े पेंचदार। लेकिन मुझमें भी अब इतनी समझ तो जरूर आ गई थी कि मैं अपनी कहानियों पर उनसे जमकर बहस कर लेती थी। जो भी हो, राजेन्द्र के सुझाव हों या वे बहसें, इन्होंने मुझे कभी हताश नहीं किया बल्कि प्रोत्साहित ही किया और मैं अपनी समझ के हिसाब से कहानियाँ लिखती रही, छपती रही।"[1]

कुछ इस तरह शुरू हुई मन्नू भंडारी की कथा–यात्रा। मन्नू भंडारी और राजेन्द्र यादव के प्रेम प्रसंग से लेकर विवाह, फिर विघटन तक की यात्रा में मन्नू भंडारी का कथा स्वर और समृद्ध हुआ। प्रस्तुत अध्याय में मन्नू भंडारी की कहानियों के प्रमुख स्त्री पात्रों का शोध–अध्ययन उपस्थापित करना है।

'मन्नू भंडारी की सम्पूर्ण कहानियाँ' नामक पुस्तक में कुल 50(पचास) कहानियाँ प्रकाशित हैं। पुस्तक का कथा–क्रम कुछ इस प्रकार है :–

मैं हार गई, श्मशान, अभिनेता, जीती बाजी की हार, गीता का गुंजन, सयानी बुआ, पंडित गजाधर शास्त्री, दो कलाकार, एक कमजोर लड़की की कहानी, दीवार बच्चे और बरसात, कील और कसक, ईसा के घर इंसान, अंकुश, अकेली, तीन निगाहों की एक तस्वीर, अनथाही गहराइयाँ, खोटे सिक्के, घुटन, हार, मजबूरी, चश्मे, नकली हीरे, नशा, इनकम टैक्स और नींद, रानी माँ का चबुतरा, क्षय, तीसरा आदमी, सजा, यही सच है, बाँहों का घेरा, संख्या के पार, कमरे कमरा और कमरे, एक प्लेट सैलाब, छत बनाने वाले, एक बार और, बन्द दराजों का साथ, ऊँचाई, नई नौकरी, दरार भरने की दरार, रेत की दीवार, अ–लगाव, आकाश के आईने में, आते जाते यायावर, शायद, असामयिक मृत्यु, तीसरा हिस्सा, स्त्री सुबोधिनी, त्रिशंकु, नायक खलनायक विदूषक, नमक।[2]

मन्नू भंडारी की कहानियों के प्रमुख स्त्री पात्रों का चयन एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस क्रम में सबसे पहले उनकी चर्चित कहानी 'सयानी बुआ' को देखा जा सकता है।

'सयानी बुआ' कहानी मन्नू भंडारी की चर्चित कहानी है। इस कहानी के प्रमुख पत्र एक अधेर स्त्री है जिसका नाम सयानी है। पूरी कहानी सयानी बुआ के इर्द–गिर्द घुमती है। सयानी बुआ समय की पाबन्द है। सायनी बुआ के घर में इनकी एक पुत्री अन्नू है और इनके पति को हम भाई साहब कहते हैं। सब पर सयानी बुआ का अनुशासन लागू है। कौन काम कब शुरू करना है और कब खत्म करना है, हर काम का समय–सीमा बंधा हुआ है।

एक बार इनकी पुत्री बीमार पड़ती है। उसका बुखार बढ़ता जाता है। उतरने का नाम नहीं लेता है। डॉक्टरों ने कई परीक्षण के बाद भाई साहब को कहा कि इसे पहाड़ पर ले जाया जाए और जितना अधिक उसे प्रसन्न रखा जा सके रखें। माँ का साथ जाना उचित नहीं होगा।

भाई साहब ने शायद पहले ही डॉक्टर को घर की सारी बातों बताई होगी। तभी तो डॉक्टर ने माँ का साथ जाना जरूरी नहीं समझा। बुआ जी ने सुना तो बहुत आनाकानी की, परन्तु डॉक्टर की राय के विरूद्ध जाने का सहस नहीं कर पाई।

अन्नू की पहाड़ पर जाने की तैयारी जोर शोर से शुरू हो गई। बुआ जी स्वयं हर चीज और सामान रखते समय भाई साहब को सख़्त हिदायत देती थी कि एक भी चीज और सामान खोनी या टूटनी नहीं चाहिए।

जब भाई साहब पहाड़ पर अन्नू को लेकर चले गए तो वे प्रतिदिन पत्र लिखते। बुआ जी पत्र पढ़ती और स्वयं रोज एक पत्र लिखती जिसमें सख्त हिदायत ही लिखा करती थी।

करीब एक महीने के बाद एक दिन भाई साहब का पत्र नहीं आया। बुआ जी का मन घबराने लगा, घर की व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी। तीसरा दिन भी पत्र नहीं आया तो बुआ जी चिंतित एवं सोच में पड़ गई, तरह–तरह की अनहोनी की विचार आने लगी।

तभी नौकर ने भाई साहब का पत्र लाकर उनके हाथों में दे दिया। घबराहट एवं हरबराहट में बुआ जी लिफाफा खोलती है और पढ़ने लगती है। अचानक पत्र फेंक कर जोर–जोर से रोने लगती है, तभी मैं साहस करके पत्र उठाई और पढ़ने लगी। एक मिनट तक मैं हत् बुद्धि सी खड़ी रही। समझ में नहीं आया क्या से क्या हो गया। ज्योंही मैं कुछ समझी तो जोर–जोर से हँसने लगी। किस प्रकार बुआजी को मैंने समझाया एवं सत्य से अवगत कराया। अन्नू बिल्कुल ठीक है। कल ही वे लोग आ रहे हैं।

वास्तविकता जानकर बुआ जी रोते–रोते हँसने लगी। पाँच आने की सुराही तोड़ देने पर नौकर को बुरी तरह से पिटने वाली बुआ जी पचास रूपये वाले सेट के प्याले टूट जाने पर भी हँस रही थी, दिल खोलकर हँस रही थी मानो जैसे उन्हें स्वर्ग की निधि मिल गई हो।

सयानी बुआ के चरित्र की विशेषता इस प्रकार है :–

1. सयानी
2. समय की पाबन्द
3. उसकी भयंकर कठोरता में कहीं कोमलता भी छिपी है।

4. अनुशासन (व्यवस्थित घर)
5. भावुक
6. तोड–फोड़ से सख्त नफरत।

मन्नू भंडारी ने कहानी के आरंभ में सयानी बुआ के नाम के संदर्भ में कुद इस तरह की टिप्पणी की है –

"सयानी बुआ का नाम वास्तव में ही सयानी था या उनके सयानेपन को देखकर लोग उन्हें सयानी कहने लगे, सो तो मैं आज भी नहीं जानती, पर इतना अवश्य कहूँगी कि जिसने भी उनका यह नाम रखा वह नामकरण विद्या का अवश्य पारखी रहा होगा।"[3]

"सारा काम वहाँ इतनी व्यवस्था से होता है जैसे सब मशीनें हों, जो कायदे में बँधी, बिना रूकावट अपना काम किये चली जा रही है। ठीक पाँच बजे सब लोग उठ जाते, फिर एक घंटा बाहर मैदान में टहलना होता, उसके बाद अन्नू को पढ़ने के लिए बैठना होता। भाई साहब भी तब तक अखबार और ऑफिस की फाईलें आदि देखा करते। नौ बजते ही नहाना शुरू होता। जो कपड़े बुआ जी निकाल दें वही पहनने होते। फिर कायदे से मेज पर बैठ जाओ और खाकर काम पर जाओ।"[4]

"बचपन में ही वे समय की कितनी पाबंद थी, अपना सामान संभालकर रखने में जितनी पटु थीं और व्यवस्था की जितनी कायल थीं, उसे देखकर चकित हो जाना पड़ता था।"[5]

हर व्यक्ति का दो रूप होता है। ऊपर से देखने पर कठोर मालूम पड़ता है लेकिन उसको समझने लगते हैं तो लगता है कि उसके अंदर भी कोमलता छिपी पड़ी है पर दिखाई नहीं देती है। ऐसा ही मन्नू भंडारी के कहानी 'सयानी बुआ' के सयानी के चरित्र में देखा जा सकता है।

"जब भाई साहब एक नौकर और अन्नू को लेकर चले गए, बुआ जी ने अन्नू को खूब प्यार किया, रोई भी। उनका रोना मेरे लिए नई बात थी। उसी दिन पहली बार लगा कि उसकी भयंकर कठोरता में कोमलता भी छिपी है। जब तक तांगा दिखाई देता रहा, वह उसे देखती रही। उसके बाद कुछ क्षण निर्जीव सी होकर पड़ी रही।"[6]

आज कल के युग में किसी को भी तोड़–फोड़ पसंद नहीं है। अगर कोई किसी चीज को तोड दे तो गुस्से में उसे मारता–पिटता भी है, चाहे वह चीज बड़ी हो या छोटी से छोटी। ऐसा ही दृष्य 'सयानी बुआ' कहानी में देखा जा सकता है।

"वे सारे बर्तन स्वयं खड़ी होकर साफ करवाती थीं। क्या मजाल कोई एक चीज भी तोड़ दे। एक बार नौकर ने सुराही तोड़ दी थी। उस छोटे से छोकरे को उन्होंने इस कसूर पर बहुत पीटा था। तोड़–फोड़ से तो उन्हें सख्त नफरत थी। यह बात उनके बर्दास्त की बाहर थी।"[7]

"दो कलाकार" मन्नू भंडारी की मुख्य कहानी में से एक है। इस कहानी के प्रमुख दो स्त्री पात्र हैं। एक का नाम चित्रा और दूसरा का नाम अरूणा है। दोनों की अच्छी सहेली है।

चित्रा और अरूणा कॉलेज के हॉस्टल में रहकर बी0ए0 की पढ़ाई कर रही है। चित्रा धनी पिता की इकलौती पुत्री है एवं चित्र बनाती है। अरूणा एक गरीब परिवार से आती है और समाज सेवी है।

इनकी मित्रता से हॉस्टल की सारी लड़कियाँ उनसे ईर्ष्या करती है। दोनों के आचार–बिचार, रहन–सहन में जमीन–आसमान का अंतर है, फिर भी कितना स्नेह है दोनों में। जब बी0ए0 के इम्तहान थे तो चित्रा, कितना उसका ख्याल रखती थी। वह अक्सर चित्रा को डाँट दिया करती थी वही चित्रा कल चली जाएगी दूर, बहुत दूर।

आज चित्रा को जाना है। वह गुरू जी से मिलने उनके घर गई, अभी तक नहीं लौटी। पाँच बजे की गाड़ी से वह जानेवाली है। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। बड़ी देर हो गई ना।

आखिर क्या हो गया जो देर हो गई? तभी चित्रा ने बताया कि – "गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे हमेशा एक भिखारिनी एवं उसके बच्चे बैठा करती हैं। वह वहीं मरी पड़ी थी और उसके बच्चे मरे हुए शरीर से चिपक कर रो रहे थे।

जाने क्या था उस दृष्य में कि मैं अपने आप को रोक नहीं पाई। एक रफ सा स्केच बना ही डाला। इसी बीच अरूणा कहीं चली गई पता ही नहीं चला। चित्रा चली गई।

विदेश जाकर चित्रा अपने काम में तन–मन से जुट गई। उसकी लगन–मेहनत नजर आने लगी। विदेश में भी उसके चित्रों की धूम मच गई। वह भी भिखारिन और उनके बच्चे के चित्र से।

दिल्ली में उसकी चित्रों की प्रदर्शनी लगी तो उसे ही उदघाटन करने के लिए बुलाया गया। उस प्रर्दशनी को देखने के लिए दूर–दूर से लोग आने लगे। अरूणा भी आई। उसी भीड़ में उसे अरूणा भी मिली तो वह उसके गले लिपट गई।

तुम कब से चित्र देखने लगी है, तब अरूणा ने कहा चित्र नहीं तुझे मिलने आई हूँ। ये किनके बच्चे हैं? अरूणा ने कहा, मेरे ही। अपने मासी को नमस्ते करो। बच्चे ने मासी को नमस्ते किया तथा चित्रा ने खुब प्यार किया।

अरूणा ने बच्चों से कहा तुम्हारी ये मासी बड़ी अच्छी तस्वीर बनाती है। ये सारी तस्वीर इन्होंने ही बनाई है। चित्रा ने घूम–घूम कर एक–एक तस्वीर बच्चों को दिखाई और घूम कर वही भिखारिन एवं बच्चे की तस्वीर के पास आकर रूक गई।

बच्चे ने पूछा ये बच्चे क्यों रो रहे हैं? तभी बालक ने बड़ी अदा से कहा देख नहीं रही कि इनके माँ मरी पड़ी है। बच्चे ने कहा ऐसी तस्वीर हमें नहीं देखनी। तभी बच्चों को पिता के साथ आगे तस्वीर देखने भेजा जाता है।

चित्रा ने फिर अरूणा से पूछा, सच–सच बता "ये बच्चे किसके हैं?"

कहा ना मेरे और किसके, अरूणा ने हँसते हुए कहा। एक क्षण रूकते हुए अरूणा ने कहा बता दूँ– और फिर उसने भिखारिनी वाले चित्र के दोनों बच्चों पर अंगुली रख कर बोली "ये ही वे बच्चे हैं।"

क्या? आश्चर्य से चित्रा की आँखे खुली की खुली रह गई। अरूणा ने पूछा क्या सोच रही है चित्रा?

कुछ नहीं – मैं.... मैं..... सोच रही थी कि – बोल नहीं पाई।

'दो कलाकार' की कहानी में चित्रा और अरूणा के चरित्र की विशेषता कुछ इस प्रकार है –

1. चित्रा और अरूणा अच्छी सहेली है।
2. चित्रा चित्र बताती है और धनी पिता की इकलौती बिटिया है।
3. अरूणा समाज सेवा करती है।
4. विदेश में चित्रा के चित्र की प्रशंसा एवं शोहरत है।
5. अरूणा भावुक लड़की है और दूसरे के दुख से दुखी होती है।
6. चित्रा और अरूणा में बहुत बड़ा अन्तर है।

परस्पर विरोधी मत रहने के बाद भी दो व्यक्तियों में आपसी स्नेह देखा जा सकता है। मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' में चित्रा और अरूणा के साथ भी कुछ ऐसा ही है। लेकिखका के शब्दों में –

"दोनों के आचार – विचार, रूचि आदि में जमीन – आसमान का अन्तर था, फिर भी कितना स्नेह था दोनो में। सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की नजर से देखता था।"[8]

अक्सर देखा जाता है कि धनी पिता की बेटी अपने मन की चलाती है, करती है, दूसरे की बात पर ध्यान नहीं देती है। मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' में भी वही बातें देखने को मिलती है।

"हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी, तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है। पर सच कहती हूँ, मुझे तो यह सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमानी लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।"[9]

अरूणा की विशाल एवं उदार हृदय को मन्नू भंडारी की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

"एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। जरा लोगों को दिखाया ही करेंगे कि हमारी एक मित्र ऐसी साहब थी जो सारे जमादार, दाईयों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ा–पढ़ाकर अपने को भारी पंडिता और समाज–सेविका समझती थी।"[10]

चित्रा अपने मेहनत के कारण प्रसिद्ध हो गई। मन्नू भंडारी के शब्दों में इसे देखा जा सकता है जो इस प्रकार है –

"विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों में कॉलम पर कॉलम आ गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ चित्रा जैसे अपना बिछड़ा सब कुछ भूल गई।"[11]

आज के युग में भी कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो दूसरों के दुःख को देखकर स्वयं दुःखी हो जाते हैं। ठीक मन्नू भंडारी की अरूणा के जैसा इसे निम्न पंक्ति में हम देख सकते हैं –

"आज सेवेरे से ही वे बड़ी परेशान थी। फूलिया दाई का बच्चा बड़ा बीमार था। दोपहर से वे उसी के यहाँ बैठी थी। पता नहीं क्या हुआ बेचारे का। 'वह बच्चा नहीं बचा चित्रा। किसी तरह से उसे नहीं बचा सके।' और उसका स्वर किसी गहरे दुःख में डूब गया।"[12]

हम हमेशा किसी व्यक्ति के बारे में सुना करते हैं कि वह दूसरे के दुःख से दुःखी होते हैं और सुख से सुखी होते हैं, अपने ही जैसा दूसरों को समझते हैं, दूसरे की भावना का कद्र करते हैं। यही सब मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' में अरूणा के चरित्र में देखा जा सकता है –

"गर्ग स्टोर के सामने बड़े पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिनी बैठी रहा करती थी था, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे दृश्य में कि मैं अपने को रोक न सकी – एक रफ सा स्केच बना ही डाला।

"ये प्यारे–प्यारे बच्चे किसके हैं" एक क्षण रूककर अरूणा ने पूछा 'बता दूँ' और फिर उस भिखारिनी वाले चित्र के दोनों बच्चों पर अँगुली रखकर बोली, ये ही वे दोनों बच्चे हैं।

'मजबूरी' कहानी कहानीकार मन्नू भंडारी के द्वारा लिखा गया है। इस कहानी में एक वृद्ध महिला मुख्य पात्र के रूप में है जिसे इस कहानी में अम्मा कह कर मन्नू भंडारी ने संबोधित किया है। अम्मा अपने एकलौता बेटा रामेश्वर से बहुत प्यार करती है। उससे भी कहीं ज्यादा अपने पोते बेटू से करती है। रामेश्वर मुंबई में नौकरी करता है वही रमा और बेटू के साथ रहता है। अम्मा के पति बैधराज औषधालय में ज्यादा समय रहा करते हैं। अम्मा को गठिया की तकलीफ है। बरस दो बरस में रामेसर अपने माँ–बाप से मिलने आया करता है। नर्बदा वर्षों से अम्मा के घर में काम करती है।

जब नर्बदा बर्तन साफ करने आती है तो अम्मा को इस कड़कड़ाती सर्दी में आँगन लिपते हुए देख कर कहती है, ये क्या कर रही हो अम्मा! नर्वदा कल मेरा बेटू आ रहा है, रामेश्वर लल्ला आ रहे हैं।

अम्मा तू भी बेटे–बहू के आने की खुशी में इतनी सर्दी में मिट्टी से सनी बैठी है। और तू ही बता किसके घर बेटे–बहू नहीं आते हैं? नर्बदा ने अम्मा को कई बातें सुना दी।

अम्मा का उत्साह कुछ गठिया के दर्द से तो कुछ नर्वदा की बातों से कम हो गया। इस कड़कड़ाती सर्दी में स्वयं ठिठुरते हुए अम्मा ने बेटे–बहु को राज करने के सारे आयोजन कर डाला।

रामेश्वर जब अपने रमा और बेटू के साथ आते हैं तो अम्मा के खुशी का ठिकाना नहीं। बहू ने कहा, अम्मा इस बार बेटू को आप ही रखेगी जैसे भी हो आप इसे अपने से मिला लिजिएगा। मैं इसी से परेशान हूँ और दो–दो को कैसे संभालूँगी। अम्मा ने कहा, तुम क्या कह रही है, बहु, बेटू मेरे पास रहेगा। अम्मा को जैसे विश्वास ही नहीं हुआ, सच में। इन सब बातों के बाद घर में जो कोई भी आया अम्मा उसे यह खबर सुनाया करती ताकि बहू का मन कहीं बदल ना जाए।

अब तो अम्मा का सारा समय बेटू में लगा रहता जैसे उसका गठिया का तकलीफ दूर हो गया हो।

जब बहु मायके जाने लगती है तो बेटू रमा के साथ जाने के लिए जिद नहीं करता है। उसे दादी अम्मा के दुलार–प्यार में रहना अच्छा लगा। महीना बितते–बितते खबर आ गई कि बहु को दूसरा भी बेटा हुआ है। अम्मा को जो संशय का कांटा जो रमा के जाने के बाद भी था वह अब निकल गया। अम्मा के मन में बेटू मेरा है कि भावना पूरी तरह जम गई।

जब रामेश्वर रमा पप्पू को लेकर मुंबई जाने लगे तो अम्मा ने बाबू के लिए ढ़ेर सारा कपड़ा बना कर दिया। अम्मा ने रोते–रोते बहु को विदा किया।

एक बरस बाद सिर्फ रमा आई। शायद बेटू को देखने। जब रमा ने बेटू को देखा तो पहले वाले बेटू और अब वाला बेटू में सामन्जस्य नहीं बना पाई। उसने देखा बेटू बड़ा जिद्दी हो गया है। अम्मा के हाथों से ही खाता है। गली–मुहल्लों के गंदे–गंदे बच्चों के साथ खेलता है इत्यादि बातें देख कर रमा ने अम्मा से कहा कि अम्मा अपने बेटू को बिगाड़कर भूल कर डाला है, ऐसा कैसे चलेगा।

दादी अम्मा ने हँसते हुए कहा, बचपन में कौन जिद्द नहीं करता। साल दो साल कर ले फिर अपने आप छूट जायेगा। रमा सुन कर घूँट पी कर रह गई। रमा की इच्छा हुई बेटू को अपने साथ ले जाए। पर एक साल का पप्पू इतना परेशान करता है कि बेटू को कैसे ले जाए सोंच कर रह गई। मुम्बई जाते ही रमा ने अम्मा को खरी–खरी भाषा में चिट्ठी लिखना शुरू कर दिया जिसमें यह लिखा रहता कि चार साल का हो तो ही बेटू को स्कूल में भर्ती करवा दे। अम्मा चिठ्ठी पढ़ती तो उसे लगता बहू का दिमाग खराब हो गया है। रमा की चिट्ठी आती रही और अम्मा अपने ढंग से करती रही।

दो बरस बाद रामेश्वर और रमा पप्पू को लेकर आई। तीन साल का पप्पू अंग्रेजी में कविता बोलता था, पर बेटू जरूर बड़ा हो गया है लेकिन कोई भी अच्छी बात उसमें नहीं थी। रमा ने रामेश्वर से कह दिया कि इस बार बेटू को कैसे भी ले जायेगी।

रमा दोनों बच्चों एवं एक नौकर को लेकर मायके चली गई। अम्मा रोती रह गई। इसके बाद जो कोई घर आया उसने आश्चर्य से कहा, बेटू को बहू ले गई? मैंने ही भेज दिया। उसे इस बुढ़ापे में कैसे पालती भला।

कुछ ही दिन में नौकर ने वापस आकर अम्मा को कहा कि बेटू आपको याद करता है और उसे बुखार आ गया है। वह बहू के हाथ से न खाना खाता है न दवा। इतना सुनते ही रात में गाड़ी से जाकर बेटू को ले आती है। एक साल इसी तरह बीत जाता है।

रमा मुंबई से आई और बेटू का वही रवैया देखा और सोचने लगी अगर सीधे मुंबई ले जाते तो यह सब नहीं होता। एक बार फिर दादी अम्मा को रूलाकर उनके मना करने के बाद भी बेटू को लेकर मुम्बई चली गई। अम्मा ने रमा के साथ शिब्बू को लगा दिया।

अम्मा आंगन में बैठी–बैठी मनौती मांगती रहती कि किसी तरह बेटू रमा से हिल–मिल जाए तो वह सवा रूप्ये की प्रसाद चढ़ाएगी। सात दिनों के बाद शिब्बु लौटकर आया और बताया कि इस बार बेटू वहाँ जम गया है। बहू ने बेटू को हिला–मिला लिया है। शिब्बू ने बताया तो अम्मा आश्चर्य से उसे देख रही थी। शिब्बू कहे जा रहा था। चलो तुम्हारी चिन्ता दूर हुई। अब तो तुम प्रसाद चढ़ाओ। अम्मा! और मजे से पूजा–पाठ करो।

एका–एक जैसे अम्मा की चेतना लौट आई। क्या कहा बेटू मुझे भूल गया? वहाँ जम गया। सच में मेरी चिन्ता दूर हो गई। इस बार भगवान ने मेरी सुन ली और उसकी आँखें गीली हो गई।

संदर्भ :

1- मेरी कथा यात्रा, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–टप्प् एवं प्र.

2- कथा–क्रम, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–टप्प् एवं ग्प्र.

3- सयानी बुआ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–50

4- सयानी बुआ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–50–51.

5- सयानी बुआ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–50

6- सयानी बुआ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–52

7- सयानी बुआ, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–51

8- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–65

9- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–63.

10- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–61–62.

11- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–65

12- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–62

13- दो कलाकार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–65 एवं 67.

14- मजबूरी, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–163.

15- मजबूरी, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–165.

16- मजबूरी, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–170.

17- संख्या के पार, सम्पूर्ण कहानियाँ, मन्नू भंडारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण–2008, पृ0सं0–292.

18- मन्नू भंडारी, मेरी प्रिय कहानियाँ, भूमिका, पृ0सं0–06.